क़ुरआनी दुआएँ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۝ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۝ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۝ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ۝ (پارہ:۱، الفاتحہ:۱-۷)

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जो हिसाब के दिन का मालिक है। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद तलब करते हैं। तू हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे। उन लोगों के रास्ते की जिन पर तू ने इनआम फ़रमाया, न उन के रास्ते की जिन पर ग़ज़ब किया गया और न गुमराहों के रास्ते की।

رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّا ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ۝ رَبَّنَا وَاجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَیۡنِ لَکَ وَ مِنۡ ذُرِّیَّتِنَاۤ اُمَّۃً مُّسۡلِمَۃً لَّکَ ۠ وَ اَرِنَا مَنَاسِکَنَا وَ تُبۡ عَلَیۡنَا ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ التَّوَّابُ الرَّحِیۡمُ ۝ (پارہ:۱، البقرۃ:۱۲۷-۱۲۸)

ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से क़बूल फरमा। यक़ीनन तू सुनने वाला, इल्म वाला है। ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी ताबेदारी करने वाला बना और हमारी औलाद में से भी अपनी ताबेदार उम्मत बना। और हम को हमारे हज के अहकाम सिखला और हमारी तौबा क़बूल फरमा। यक़ीनन तू तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (پارہ:۲، البقرۃ:۲۰۱)

ऐ हमारे रब! तू हमें दुन्या में भी भलाई अता फरमा और आख़िरत में भी भलाई अता फरमा और तू हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले!

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ (پارہ:۳،اٰل عمرٰن:۸-۹)

ऐ हमारे रब! तू हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर इस के बाद के तू ने हमें हिदायत दी और तू हमारे लिए अपनी तरफ से रहमत अता फरमा। यक़ीनन तू बहोत अता करने वाला है। ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू इन्सानों को जमा करने वाला है ऐसे दिन में जिस में कोई शक नहीं। यक़ीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे।

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (پارہ:۳،اٰل عمرٰن:۱۶)

ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ईमान ले आए तो हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ (پارہ:۳،اٰل عمرٰن:۵۳)

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं उस पर जो आप ने उतारा और हम ने रसूल का इत्तिबा किया, तो आप हमें गवाही देने वालों के साथ लिख लीजिए।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝
(پارہ:۴،اٰل عمرٰن:۱۴۷)

ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे गुनाह बख्श दे और इस काम में हमारी ज़्यादती मुआफ कर दे और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िर क़ौम के खिलाफ हमारी नुसरत फरमा।

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ

ऐ हमारे रब! तू ने इस को बेकार पैदा नहीं किया। तू पाक है,तो तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब! यक़ीनन जिस को तू आग में दाखिल करेगा तो

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا
يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ق صلے رَبَّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ
الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ لَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

(پارہ:۴،اٰل عمرٰن:۱۹۱-۱۹۴)

यक़ीनन तू ने उस को रुस्वा कर दिया। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ने एक मुनादी को सुना जो ईमान की आवाज़ लगा रहा था के ईमान ले आओ अपने रब पर, फिर हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब! फिर तू हमारे गुनाह बख्श दे और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे और तू हमें नेक लोगों के साथ वफ़ात दे। ऐ हमारे रब! और तू हमें वो चीज़ अता फरमा जिस का तू ने हम से वादा किया तेरे पैग़म्बरों की ज़बानी और तू हमें क़यामत के दिन रुस्वा न कर। यक़ीनन तू वादे के खिलाफ नहीं करेगा।

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا سكتة وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا
لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ (پارہ:۸،الاعراف:۲۳)

ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। और अगर आप हमारी मग़फ़िरत नहीं करोगे और हम पर रहम नहीं करोगे तो हम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाएंगे।

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَيْرُ
الْفٰتِحِيْنَ ۝ (پارہ:۹،الاعراف:۸۹)

ऐ हमारे रब! तू हमारे दरमियान और हमारी क़ौम के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दे और तू सब से अच्छा फैसला करने वाला है।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ۝

(پارہ:۹،الاعراف:۱۲۶)

ऐ हमारे रब! हम पर सब्र उंडेल दे और तू हमें मुसलमान होने की हालत में वफ़ात दे।

رَبَّنَآ اِنِّیۡۤ اَسۡکَنۡتُ مِنۡ ذُرِّیَّتِیۡ بِوَادٍ غَیۡرِ ذِیۡ زَرۡعٍ عِنۡدَ بَیۡتِکَ الۡمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِیُقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ فَاجۡعَلۡ اَفۡئِدَۃً مِّنَ النَّاسِ تَہۡوِیۡۤ اِلَیۡہِمۡ وَارۡزُقۡہُمۡ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّہُمۡ یَشۡکُرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَآ اِنَّکَ تَعۡلَمُ مَا نُخۡفِیۡ وَ مَا نُعۡلِنُ ؕ وَ مَا یَخۡفٰی عَلَی اللّٰہِ مِنۡ شَیۡءٍ فِی الۡاَرۡضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ (پارہ:۱۳، ابراہیم:۳۷-۳۸)

ऐ हमारे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी औलाद में से बाज़ को ऐसी वादी में जो खेती वाली नहीं तेरे इज़्ज़त वाले घर के पास ठेहराया है। ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो नमाज़ क़ाइम करें, फिर लोगों के दिलों को आप कर दीजिए के उन की तरफ माइल हों और उन्हें रोज़ी दीजिए फलों की ताके वो शुक्र अदा करें। ऐ हमारे रब! यक़ीनन आप जानते हैं वो जिसे हम छुपाते हैं और जिसे हम ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह पर कोई चीज़ मख़फ़ी नहीं है न ज़मीन में और न आसमान में।

رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنۡ لَّدُنۡکَ رَحۡمَۃً وَّ ہَیِّئۡ لَنَا مِنۡ اَمۡرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ (پارہ:۱۵، الکہف:۱۰)

ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी तरफ से रहमत अता कर और हमारे लिए हमारे मुआमले में रहनुमाई मुहय्या फरमा।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَ اَنۡتَ خَیۡرُ الرّٰحِمِیۡنَ ﴿۱۰۹﴾ (پارہ: ۱۸، المؤمنون:۱۰۹)

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तू हमारी मग़फ़िरत कर दे और तू हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन रहम करने वाला है।

رَبَّنَا اصۡرِفۡ عَنَّا عَذَابَ جَہَنَّمَ ۫ اِنَّ عَذَابَہَا کَانَ غَرَامًا ﴿۶۵﴾ اِنَّہَا سَآءَتۡ مُسۡتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۶۶﴾ (پارہ ۱۹، الفرقان:۶۵-۶۶)

ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का अज़ाब हटा दे। यक़ीनन उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है। यक़ीनन जहन्नम ठेहेरने और रेहने की बुरी जगह है।

رَبَّنَا ہَبۡ لَنَا مِنۡ اَزۡوَاجِنَا وَ ذُرِّیّٰتِنَا قُرَّۃَ اَعۡیُنٍ

ऐ हमारे रब! हमारे लिए अपनी बीवियों

وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ (پارہ:۱۹،الفرقان:۷۴)

और अपनी औलाद की तरफ से आँखों की ठन्डक अता फरमा और हमें मुत्तक़ियों का पेशवा बना।

رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَیْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِیْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّیّٰتِهِمْ ط اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّیِّاٰتِ ط وَمَنْ تَقِ السَّیِّاٰتِ یَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ط وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ (پارہ:۲۴،المؤمن:۷-۹)

ऐ हमारे रब! तेरी रहमत और तेरा इल्म हावी है, तो तू मग़फ़िरत कर दे उन की जिन्हों ने तौबा की और तेरा रास्ता अपनाया और उन को दोज़ख के अज़ाब से तू बचा ले। ऐ हमारे रब! और तू उन को जन्नाते अदन में दाखिल कर दे जिस का तू ने उन से वादा किया है, और उन को भी जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और उन की बीवियों और उन की औलाद में से। यक़ीनन तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है। और तू उन को बुराइयों से बचा ले। और जिस को तू बुराइयों से बचा लेगा उस दिन यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया। और ये भारी कामयाबी है।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ۝ (پارہ:۲۸،الحشر:۱۰)

ऐ हमारे रब! मग़फ़िरत कर दे हमारी और हमारे भाइयों की, उन की जिन्हों ने ईमान में हम से सबक़त की है और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना मत रख, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा शफ़क़त वाला, निहायत मेहरबान है।

رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ (پارہ:۲۸،التحریم:۸)

ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे नूर को इत्माम तक पहोंचा और हमारी मग़फ़िरत कर दे। यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۪ وقفه وَاغْفِرْ لَنَا ۪ وقفه وَارْحَمْنَا ۪ وقفه اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (پارہ:۳،البقرۃ:۲۸۶)

ऐ हमारे रब! तू हमारा मुआख़ज़ा मत कर अगर हम भूल जाएं या हम चूक जाएं। ऐ हमारे रब! और तू हम पर न लाद बोझ जैसा के तू ने उस को लादा उन लोगों पर जो हम से पेहले थे। ऐ हमारे रब! और तू हम पर न लाद उस को जिस की हम में ताक़त नहीं। उर तू हमें मुआफ कर दे। और हमें बख्श दे। और हम पर रहम फरमा। तू हमारा मौला है, तू काफ़िर क़ौम के खिलाफ हमारी नुसरत फरमा।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (پارہ:۲،البقرۃ:۲۵۰)

ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे क़दम जमा दे और तू हमारी नुसरत फरमा काफ़िर क़ौम के खिलाफ।

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝ (پارہ:۵،النسآء:۷۵)

ऐ हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के बसने वाले ज़ालिम हैं। और हमारे लिए अपनी तरफ से हिमायती मुतअय्यन फरमा। और हमारे लिए अपनी तरफ से नुसरत करने वाला मुतअय्यन फरमा।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(پارہ:۸، الاعراف:۴۷)

ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिमों के साथ मत करना।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَ نَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ (پارہ:۱۱،یونس:۸۵-۸۶)

ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम क़ौम का तख्तए मश्क़ न बना। और तू अपनी रहमत से काफ़िर क़ौम से हमें नजात दे।

ऐ हमारे रब! उन के मालों को मिटा दे और उन के दिलों को सख्त कर दे के वो ईमान न लाएं यहाँ तक के दर्दनाक अज़ाब देखें।

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ (پارہ:۱۱،یونس:۸۸)

ऐ हमारे रब! हम ने तुझ ही पर तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ तौबा करते हैं और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब! हमें काफिरों का तख्तए मश्क़ न बना और हमारी मग़फ़िरत कर दे, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू ज़बरदस्त है, हिकमत वाला है।

رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (پارہ: ۲۸،الممتحنۃ:۴-۵)

ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे दिखाए वो जिस से उन्हें डराया जा रहा है। ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल मत करना।

رَبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پارہ:۱۸،المؤمنون:۹۳-۹۴)

ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझ पर इनआम फ़रमाया है, तो मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ नहीं बनूँगा।

رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝ (پارہ:۲۰،القصص:۱۷)

ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम क़ौम से बचा ले।

رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پارہ:۲۰،القصص:۲۱)

ऐ मेरे रब! इस मुफ़सिद क़ौम के खिलाफ तू मेरी नुसरत फरमा।

رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
(پارہ:۲۰،العنکبوت:۳۰)

ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत

رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ

وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ (پارہ:۲۸، التحریم:۱۱)

में एक घर तामीर कर और तू मुझे फ़िरऔन और उस के अमल से नजात दे और तू मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे।

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ لَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝ (پارہ:۲۹، نوح:۲۶-۲۸)

ऐ मेरे रब! तू ज़मीन पर काफिरों का एक घर भी बस्ता हुवा मत छोड़। इस लिए के अगर तू उन को छोड़ेगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और वो नहीं जनेंगे मगर फाजिर काफ़िर ही को। ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मेरे वालिदैन की और उस शख्स की जो मेरे घर में मोमिन बन कर आए और ईमान वाले मर्दों की और मोमिन औरतों की। और तू ज़ालिमों को मत बढ़ा मगर हलाकत में।

اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَ حُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ (پارہ:۱۳، یوسف:۸۶)

मैं तो फ़रयाद करता हूँ अपनी बेक़रारी और अपने ग़म की सिर्फ अल्लाह से।

اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝ (پارہ:۲۷، القمر:۱۰)

मैं मग़लूब हूँ,तू मेरी नुसरत फरमा।

رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ (پارہ:۱، البقرۃ:۱۲۶)

ऐ मेरे रब! इस को अम्न वाला शेहेर बनाइए और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दीजिए,उन को जो उन में से ईमान रखते हों अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ

ऐ मेरे रब! मैं ने आप की नज़र कर दिया आज़ाद बना कर इस बच्चे को जो

मेरे पेट में है, तो आप उसे मेरी तरफ से क़बूल कर लीजिए। यक़ीनन आप सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

مِنِّیۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ۝ (پارہ:۳، اٰل عمرٰن: ۳۵)

ऐ मेरे रब! तू मुझे अपनी तरफ से पाकीज़ा औलाद अता फरमा। यक़ीनन तू दुआ को सुनने वाला है।

رَبِّ هَبۡ لِیۡ مِنۡ لَّدُنۡكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِیۡعُ الدُّعَآءِ ۝ (پارہ:۳، اٰل عمرٰن:۳۸)

ऐ मेरे रब! मेरी और मेरे भाई की मग़फ़िरत फरमा और तू हमें अपनी रहमत में दाखिल कर दे। और तू अरहमुरराहिमीन है।

رَبِّ اغۡفِرۡ لِیۡ وَ لِاَخِیۡ وَ اَدۡخِلۡنَا فِیۡ رَحۡمَتِكَ ۫ وَ اَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِیۡنَ ۝ (پارہ:۹، الاعراف:۱۵۱)

ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से के मैं तुझ से सवाल करूँ ऐसी चीज़ का जिस का मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मेरी मग़फ़िरत नहीं करेगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा तो मैं ख़सारा उठाने वालों में से बन जाऊँगा।

رَبِّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ اَنۡ اَسۡـَٔلَكَ مَا لَیۡسَ لِیۡ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغۡفِرۡ لِیۡ وَ تَرۡحَمۡنِیۡۤ اَكُنۡ مِّنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ۝ (پارہ۱۲:ھود:۴۷)

ऐ मेरे रब! इस शेहेर को अम्न वाला बनाइए और मुझे और मेरे बेटों को इस से बचाइए के हम बुतों की इबादत करें।

رَبِّ اجۡعَلۡ هٰذَا الۡبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجۡنُبۡنِیۡ وَ بَنِیَّ اَنۡ نَّعۡبُدَ الۡاَصۡنَامَ ۝ (پارہ:۱۳، ابرٰھیم:۳۵)

ऐ मेरे रब! आप मुझे नमाज़ क़ाइम करने वाला बनाइए और मेरी औलाद में से भी। ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ को क़बूल कर लीजिए। ऐ हमारे रब! मेरी और मेरे वालिदैन की और तमाम ईमान वालों की मग़फ़िरत कर दीजिए उस दिन जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।

رَبِّ اجۡعَلۡنِیۡ مُقِیۡمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنۡ ذُرِّیَّتِیۡ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلۡ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغۡفِرۡ لِیۡ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَوۡمَ یَقُوۡمُ الۡحِسَابُ ۝ (پارہ:۱۳، ابرٰھیم:۴۰-۴۱)

ऐ मेरे रब! तू उन दोनों पर रहम फरमा जैसा के उन्हों ने बचपन में मेरी परवरिश की।

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

(پارہ:۱۵، بنی اسرآئیل:۲۴)

ऐ मेरे रब! तू मुझे दाखिल कर सच्चा दाखिल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना और तू मेरे लिए अपनी तरफ से मददगार क़ूव्वत अता फरमा।

رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝

(پارہ:۱۵، بنی اسرآئیل:۸۰)

ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं और सर में बुढ़ापा फैल चुका है और मैं तुझ से मांगने में ऐ मेरे रब! नाकाम नहीं रहा। और यक़ीनन मैं अपने पीछे वारिसों से डरता हूँ और मेरी बीवी बाँझ है, तो तू अपनी तरफ से मेरे लिए वारिस अता फरमा। जो मेरा वारिस बने और आले यअक़ूब का वारिस बने। और उसे ऐ मेरे रब! तू पसन्दीदा बना।

رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّ لَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَ كَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَّرِثُنِيْ وَ يَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۗ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ (پارہ:۱۶، مریم:۴-۶)

ऐ मेरे रब! तू मुझे तन्हा मत छोड़ और तू बेहतरीन वारिस है।

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝

(پارہ:۱۷، الانبیآء:۸۹)

ऐ मेरे रब! मेरे लिए मेरा सीना खोल दीजिए। और मेरे लिए मेरे मुआमले में आसानी कर दीजिए। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए। ताके वो मेरी बात को समझ सकें।

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۝ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۝ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۝

(پارہ:۱۶، طٰہٰ:۲۵-۲۸)

ऐ मेरे रब! मुझे ज़्यादा इल्म दे।

رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا ۝ (پارہ:۱۶،طٰہٰ:۱۱۴)

ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फैसला कर दे।

رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۝ (پارہ:۱۷،الانبیآء:۱۱۲)

ऐ मेरे रब! तू मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू बेहतरीन उतारने वाला है।

رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ۝
(پارہ:۱۸،المؤمنون:۲۹)

ऐ मेरे रब! मैं शैतान के वसाविस से तेरी पनाह मांगता हूँ। और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ इस से के वो मेरे पास हाज़िर हों।

رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ۝ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ ۝ (پارہ:۱۸،المؤمنون:۹۷-۹۸)

ऐ मेरे रब! तू मग़फ़िरत फरमा और रहम कर और तू बेहतरीन रहम करने वाला है।

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَ اَنْتَ خَیْرُ الرّٰحِمِیْنَ ۝
(پارہ:۱۸،المؤمنون:۱۱۸)

ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म अता फरमा और मुझे सुलहा के साथ मिला दे। और मेरा ज़िक्रे खैर पीछे आने वालों में रख दे। और मुझे जन्नते नईम के वुरसा में से बना दे।

رَبِّ هَبْ لِیْ حُكْمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ۝ وَاجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ ۝ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِیْمِ ۝ (پارہ: ۱۹،الشعرآء:۸۳-۸۵)

ऐ मेरे रब! तू नजात दे मुझे और मेरे मानने वालों को उस हरकत से जो वो कर रहे हैं।

رَبِّ نَجِّنِیْ وَ اَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ ۝ (پارہ:۱۹،الشعرآء:۱۶۹)

ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफीक़ दे के तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने

رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ

عَلٰى وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ (پارہ:۱۹،النمل:۱۹)	मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की है और इस की के मैं नेक अमल करूँ जिसे तू पसन्द कर ले और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाखिल कर दे।
رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَیْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ (پارہ:۱۹،النمل:۴۴)	ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर इस्लाम ले आई।
رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ (پارہ:۲۰،القصص:۱۶)	ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने मेरी जान पर ज़ुल्म किया, इस लिए तू मेरी मग़फ़िरत कर दे।
رَبِّ اِنِّیْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَیَّ مِنْ خَیْرٍ فَقِیْرٌ ۝ (پارہ:۲۰،القصص:۲۴)	ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं मुहताज हूँ उस खैर का जो तू मेरी तरफ उतारे।
رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ (پارہ:۲۳،الصّٰفّٰت:۱۰۰)	ऐ मेरे रब! तू मुझे सुलहा में से औलाद अता कर।
رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ هَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (پارہ:۲۳،صٓ:۳۵)	ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता फरमा जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो। यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा अता करने वाला है।
رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ	ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के मैं तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तू

عَلٰى وَالِدَيَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ط ج اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ (پارہ:۲۶،الاحقاف:۱۵)

ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की और इस की के मैं नेक अमल करूँ जो तू पसन्द करे, और तू मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह (व तक़वा) रख दे। यक़ीनन मैं तेरी तरफ तौबा करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।

اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَ تُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (پارہ:۳،ال عمرٰن:۲۶-۲۷)

ऐ अल्लाह! सल्तनत के मालिक! तू सल्तनत देता है जिसे चाहता है और सल्तनत छीनता है जिस से चाहता है। और तू इज़्ज़त देता है जिसे चाहता है और तू ज़िल्लत देता है जिसे चाहता है। तेरे ही हाथ में भलाई है। यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। तू रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है। और तू जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ اٰيَةً مِّنْكَ ج وَارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ (پارہ:۷،المائدۃ:۱۱۴)

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तू हम पर आसमान से भरा हुवा दस्तरख्वान उतार जो हमारे अगलों और पिछलों के लिए ख़ुशी का बाइस बने और तेरी तरफ से निशानी हो। और आप हमें रोज़ी दीजिए, और आप बेहतरीन रोज़ी देने वाले हैं।

اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ط (پارہ:۹،الاعراف:۱۵۵-۱۵۶)

तू हमारा कारसाज़ है, तू हमारी मग़फ़िरत कर दे और हम पर रहम फरमा, तू बेहतरीन मग़फ़िरत करने वाला है। और हमारे लिए इस दुन्या में भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, यक़ीनन हम ने आप की तरफ रुजूअ किया।

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝ (پارہ:۴،اٰل عمرٰن:۱۷۳)

अल्लाह हमें काफी है और बेहतरीन कारसाज़ है।

حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝ (پارہ:۱۱،التوبۃ:۱۲۹)

मुझे अल्लाह काफी है। उस के सिवा कोई मअबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और वो अर्शे अज़ीम का रब है।

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ (پارہ:۳،البقرۃ:۲۸۵)

ऐ हमारे रब! तू हमारी मग़फ़िरत कर दे और तेरी ही तरफ लौटना है।

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ قف اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

(پارہ:۱۳،یوسف:۱۰۱)

ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही मेरा दुन्या और आख़िरत में कारसाज़ है। तू मुझे मुसलमान होने की हालत में वफ़ात दे और मुझे सुलहा के साथ मिला दे।

اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

(پارہ:۱۷،الانبیآء:۸۳)

मुझे तकलीफ पहोंची है और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(پارہ:۱۷،الانبیآء:۸۷)

कोई मअबूद नहीं मगर तू ही, तू पाक है। यक़ीनन मैं क़ुसूरवारों में से हूँ।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝ (پارہ:۳۰،الفلق:۱-۵)

आप फरमा दीजिए मैं सुब्ह के मालिक की पनाह मांगता हूँ। अस की मख्लूक़ के शर से। और अँधेरी रात के शर से जब वो आ जाए। और गिरहों में दम करने वालियों के शर से। और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِ ۙ الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۙ (پارہ:۳۰،الناس:۱-۶)

आप फरमा दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ तमाम इन्सानों के रब की। तमाम इन्सानों के बादशाह की। तमाम इन्सानों के मअबूद की। वस्वसा डालने वाले, पीछे हटने वाले (शैतान) के शर से। जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में। वो जिन्नात में से हो और इन्सानों में से हो।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى ؕ (پارہ:۱۹،النمل:۵۹)

तमाम तर तारीफें अल्लाह के लिए हैं और सलामती हो अल्लाह के उन बन्दों पर जो उस ने मुन्तख़ब किए।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡۤ اَذۡهَبَ عَنَّا الۡحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوۡرٌ شَكُوۡرٌ ۙ (پارہ:۲۲،فاطر:۳۴)

तमाम तर तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया। यक़ीनन हमारा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, क़दरदान है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۟ وَ مَا كُنَّا لِنَهۡتَدِىَ لَوۡلَاۤ اَنۡ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ (پارہ:۸،الاعراف:۴۳)

तमाम तर तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की हिदायत दी। और हम ऐसे नहीं थे के हम हिदायत पाते अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता।

سُبۡحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۙ وَ سَلٰمٌ عَلَى الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۙ (پارہ:۲۳،الصّٰفّٰت:۱۸۰-۱۸۲)

आप का रब पाक है, इज़्ज़त वाला रब है, पाक है उन बातों से जो ये बयान कर रहे हैं। और सलामती हो पैग़म्बरों पर। और तमाम तर तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝